प्रथम अध्याय

"जयप्रकाश कर्दम :
व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रथम अध्याय

"जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

1.1 जीवन परिचय :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने नाम 'जयप्रकाश' के अनुरूप व्यक्तित्व तथा कृतित्व के धनी हैं। वे हिंदी साहित्य क्षेत्र में दलित साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर तथा बहुमुखी प्रतिभा के संपन्न रचनाकार के रूप में परिचित हैं। जयप्रकाश कर्दम जी भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित दलित समाज के यथार्थ जीवन के स्वानुभूति एवं सहानुभूति के पहलुओं से जुड़े हुए वास्तविकता के जानकार हैं। उन्होंने अपने जीवन में जिन घटनाओं को अनुभूत किया है, उसी सत्य को एक समाजाभिमुख चिंतनशील जागृत साहित्यकार के रूप में अपनी कलम द्वारा रचना सृजन में अंकन किया हैं। उनका रचना संसार दलित समाज जीवन का दर्पण ही नहीं बल्कि उनके रचना सृजन के केंद्र में सामाजिक परिवर्तन की चेतना भी निहित हैं। अत: जयप्रकाश कर्दम जी का जीवन परिचय तथा व्यक्तित्व: कृतित्व का विवेचन तथा विश्लेषण का विस्तृत विवरण यहाँ पर प्रस्तुत हैं -

1.1.1 जन्म तिथि एवं जन्मस्थान :

जयप्रकाश कर्दम जी ने अपने जन्म तिथि तथा जन्म स्थान के बारे में स्वयं लिखा है - "मेरा जन्म 17 फरवरी, 1959 को गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश) के निकट हापुड़ रोड़ पर स्थित इन्दरगढ़ी गाँव में हुआ। उस समय दिल्ली की सीमा से लगा गाजियाबाद मेरठ जिले का एक तहसील हुआ करता था। सन् 1975 में गाजियाबाद जिला बना। मेरे शैक्षिक प्रमाण-पत्र और सरकारी दस्तावेजों में मेरी जन्म तिथि 05 जुलाई, 1958 दर्ज है। वस्तुत: मेरी असली जन्म तिथि तो 17 फरवरी, 1959 है किन्तु परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण कम उम्र में ही मेरे ऊपर जल्दी-से-जल्दी कमाने का दबाव रहा। इसलिए हाईस्कूल की परीक्षा का फार्म भरते समय मैंने अपनी दूसरी जन्म तिथि

लिख दी ताकि मैं जल्दी से अट्ठारह वर्ष का हो जाऊँ और सरकारी नौकरी के लिए आवेदन भेज सकूं। अब **05** जुलाई, **1958** ही मेरी अधिकारिक जन्म तिथि हैं।"[1]

1.1.2 माता-पिता :

जयप्रकाश कर्दम जी के पिता का नाम हरिसिंह और माता का अतरकली है। ये दोनों अपने जीवन में संघर्षशील, परिश्रमी तथा कर्तव्यदक्ष आदर्श दाम्पत्य के रूप में कार्यरत थे। जयप्रकाश जी के पिता मैट्रिक तक शिक्षित थे। वे जीवनयापन के लिए मेहनत-मजदूरी करते थे। वे स्वभाव से सरल हृदय, मिलनसार तथा नैतिकता का पालन करनेवाले आदर्श पति तथा पिता के रूप में एक जिम्मेदार व्यक्ति थे। वे स्वयं दु:ख और अभावों को सहकर दीन-दलितों के दु:ख, दर्द से द्रवित होकर उन्हें सहायता के लिए सदैव सजग रहते थे। किन्तु बीमारी से त्रस्त होने के कारण वे सन् **1976** ई में असमय मृत्यु के शिकार बने। जयप्रकाश जी अपनी माता अतरकली जी के वारें में लिखते है - "मेरी माँ का नाम अतरकली है, उसे अतरों कहकर ही परिवार रिश्तेदार और गाँव के लोग पुकारते हैं। वह एक अशिक्षित और घरेलु महिला है।"[2] जयप्रकाश जी की माता जीवनभर अभावों से पीड़ित रहकर मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार के उदरनिर्वाह के लिए कठोर परिश्रम से संघर्षरत रही हैं। इसके वारें में जयप्रकाश जी लिखते है - "पिताजी बीमारी के कारण शरीर से कमजोर थे। माँ ही ज्यादातर घर-खेतों में काम करती थी। अपने खेत न रहने पर वह दूसरों के खेतों में मजदूरी करती थी।"[3] अतरकली का स्वभाव भी जयप्रकाश जी के पिता हरिसिंह के अनुरूप ही मिलनसार, मृदुभाषी, विनम्र और कर्तव्यपरायण आदि गुणों से संपन्न हैं।

1.1.3 भाई-बहन :

जयप्रकाश कर्दम जी के तीन भाई तथा तीन वहनें रही हैं। भाईयों के नाम रणजितसिंह, संदीपकुमार, कुलदीपकुमार और बहन के नाम सोनवती, मधुवाला, मालती हैं। जयप्रकाश जी अपने भाई-बहन के वारें में लिखते हैं - "भाई-वहन में सवसे बड़ी वहन है, सोनवती मुझसे दो-तीन वर्ष बड़ी उसकी शादी जल्दी ही हो गयी थी जव मैं

सातवीं कक्षा में पढ़ता था। दूसरे नम्बर पर मैं रहा। उसके वाद छोटा भाई रणजितसिंह वह दिल्ली में विद्युत विभाग में नौकरी करता है। तीन वच्चों का पिता है। गाजियावाद में उसका अपना मकान है उसने अव गाड़ी भी खरीद ली है। चौंथे और पांचवे नम्बर पर दो वहने मधुवाला और मालती। मधु (रोहिणी) दिल्ली में रहती है। उसका पति दिल्ली पुलिस में प्रदुषण नियंत्रण शाखा में काम करता है। मालती का पति नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन (N.T.P.C.) नोएड़ा में कर्मचारी है। वे वहीं पर रहते हैं। सवसे छोटे दो भाई हैं संदिपकुमार और कुलदीप। संदीपकुमार एम.ए.पास है उसकी पत्नी अध्यापिका है और ऐटा (उत्तरप्रदेश) में तैनात है। वे वहीं पर रहते हैं। कुलदीप गाँव में ही रहकर मजदूरी करता है। वह मैट्रिक भी पास नहीं कर सका।"[4]

1.1.4 बचपन :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने बचपन के बारे में लिखते है - "मेरा वचपन मेरे गाँव- इन्दरगढ़ी, जिला - गाजियावाद (उत्तरप्रदेश) में बीता। बचपन के समय मेरा परिवार वहुत गरीव नहीं था। खेत थे, बैल थे, गाड़ी थी - ठीक तरह से परिवार का गुजारा होता था लेकिन दादाजी की मृत्यु के वाद स्थिति वदल गयी। पिताजी टी.वी. के मरीज थे। वे खेतों में काम नहीं कर सके। एक-एक कर सारे खेत बिक गये और हमें पेट भरने के लिए, रोटी के लिए मुश्किल पड़ गयी। सन् 1976 में जव पिताजी की मृत्यु हुई, मैं 11 वीं कक्षा में पढ़ता था। स्कूल न जाकर मजदूरी करने पांच रूपये प्रतिदिन पर जाता था। रात में घर पर पढ़ता था। इन्टरमीडिएट (12 वीं) विज्ञान विषयों के साथ उत्तीर्ण करने के वाद सन् 1977 में वी.एस.सी. में प्रवेश नहीं ले सका क्योंकि कॉलेज की फीस के लिए पैसे नहीं थे। वह एक वर्ष व्यर्थ गया।

बचपन में खूब खेलता था, गाता था। दादी को 'आल्हा' और 'ढोला' सुनने का वहुत शौक था। मैं पूरी तर्ज के साथ 'आल्हा' और 'ढोला' गाता था। रागीनी भी गाता था। मैंने नाटक भी खेले।[5]

उक्त विवेचन से स्पष्ट है जयप्रकाश कर्दम जी का वचपन प्यार-दुलार तथा खेलते-कूदते बीता किन्तु उनके पिता की असमय मृत्यु के कारण जयप्रकाश जी को सबसे बड़ी संतान के रूप में जिम्मेदारी को निभाते हुए अपने छोटे भाई-वहन के पालन-पोषण का बोझ संभालना पड़ा। युवावस्था में अभावों से घिरे हुए एक संघर्षरत जीवन संघर्ष के योद्धा के भाँति जयप्रकाश कर्दम जी कर्मरत रहें।

1.1.5 शिक्षा :

जयप्रकाश कर्दम जी अपनी शिक्षा के बारे में लिखते हैं - "मैं वचपन से ही पढ़ने में कुशाग्र था। कक्षा में प्रथम आता था।"[6] जयप्रकाश जी के परिवार की आर्थिक स्थिति साधारण थी फिर भी जयप्रकाश जी की शिक्षा में रूचि होने के कारण उन्होंने कई समस्याओं से संघर्षरत रहकर उच्च शिक्षा हासिल की है। उन्होंने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात स्वयं मेहनत-मजदूरी करके अपनी शिक्षा को जारी रखा। इसके वारे में वे कहते हैं कि - "सन् 1976 में जव पिताजी की मृत्यु हुई, तव मैं 11 वीं कक्षा में पढ़ता था। स्कूल न जाकर मजदूरी करने जाता था, पाँच रुपये प्रतिदिन पर। रात में घर पर पढ़ता था।"[7]

जयप्रकाश कर्दम जी की प्राथमिक शिक्षा उनके जन्म गाँव इन्दरगढ़ी जिला गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश राज्य में स्थित 'महानन्द मिशन हरिजन पाठशाला' में हुई। प्राथमिक शिक्षा के पश्चात हाईस्कूल की शिक्षा उनके गाँव से एक मिल पर स्थित 'इण्टरमीड़िएट' कॉलेज आध्यात्मिक नगर जिला गाजियावाद, (उत्तरप्रदेश) से विज्ञान विषयो को लेकर सन् 1975 ई. में संपन्न हुई।

जयप्रकाश कर्दम ने उच्चशिक्षा संवंधी सभी उपाधियाँ एम.एम.एच. कॉलेज गाजियावाद से नियमित छात्र के रूप में प्राप्त की हैं। उन्होंने सन् 1980 ई. में दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी और हिंदी इन साहित्यिक विषयों के साथ वी.ए. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1982 ई. में प्रायव्हेट रूप में एम.ए. की उपाधि दर्शनाशास्त्र विषय को लेकर

प्राप्त की। सन् 1984 ई.में एम.ए. हिंदी में और 1986 ई.में एम.ए.इतिहास में उत्तीर्ण हुए। उन्होंने सन् 2000 ई. में हिंदी विषय में 'रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन' इस विषय पर शोध-प्रबंध लिखकर पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की है। जयप्रकाश कर्दम ने उपर्युक्त सभी उपाधियाँ 'मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ' (उत्तरप्रदेश) से प्राप्त की है। वर्तमान समय में इस विश्वविद्यालय का नामकरण 'चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय' किया गया है।

1.1.6 नौकरी :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने नौकरी संदर्भ में लिखते है - "मेरे सरकारी नौकरी की शुरूआत सन् 1980 में बी.ए.की पढ़ाई के दौरान हो गयी थी। सबसे पहले बिक्री कर विभाग में अमीन बना गाजियाबाद में ही। फिर क्लर्क के पद पर दो-तीन साल काम किया। इस दौरान बी.ए. हुआ फिर दर्शनशास्त्र विषय में एम.ए. किया और हिंदी में भी एम.ए. किया। सन् 1984 में बैंक की नौकरी में चला गया। पहली नियुक्ति इलाहबाद में हुई। फिर स्थानांतरित होकर मेरठ आ गया। इस दौरान इतिहास में भी एम.ए.की उपाधि हासिल की और सिविल सर्विस की परीक्षाओं में भाग लिया। उत्तरप्रदेश की P.C.S. की परीक्षा दो बार पास की। पहली बार साक्षात्कार में सफल नहीं हो सका दूसरी बार अधिनस्थ सेवा में सफल हुआ-नायव तहसीलदार के पद पर मेरी नियुक्ति हुई जिसे मैंने स्वीकार नहीं किया।

सन् 1989 में संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा में सहायक निर्देशक के पद पर चयनित हुआ। सन् 1996 में पदोन्नत होकर उपनिदेशक बना। अब भारतीय उच्चआयोग पोर्ट लुई (मॉरिशस), में द्वितीय सचिव (शिक्षा एवं संस्कृति) के पद पर प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत हूँ। यह नियुक्ति भी संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से ही हुई है।"[8]

1.1.7 विवाह :

जयप्रकाश कर्दम जी का विवाह दिल्ली में स्थित साधन-संपन्न परिवार में पली शिक्षित श्रीमती ताराजी से हुआ है। जयप्रकाश जी अपने विवाह के बारे में लिखते है - "मेरा विवाह 16 अक्तूंबर, 1988 में बौद्ध पद्धति के अनुरूप हुआ।"[9] जयप्रकाश जी की पत्नी ताराजी एम.ए. (हिंदी), बी.एड. हैं जो इस समय राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (दिल्ली) सरकार में अध्यापिका के पद पर कार्यरत है। इनका स्वभाव सहयोगी, स्नेही तथा कर्तव्यदक्ष एवं मानवतावादी मूल्यों से संपन्न है।

1.1.8 संतान :

जयप्रकाश कर्दम जी को तीन अपत्य हैं। इनमें दो बेटियाँ कु.कम्पिला और कु.विशाखा है। इन दोनों लड़कियों ने अगस्त, 2008 की मेडिकल और इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा पास की हैं और बेटा आयु.कुणाल दिल्ली में ही सेंट जेवियर स्कूल में 9 वीं कक्षा में पढ़ता है। जयप्रकाश तथा ताराजी दोनों अपने बच्चों को आदर्श नागरिक तथा मानवतावादी धर्म के संस्कारों की शिक्षा से संपन्न बनाकर वे अपने परिवार तथा बच्चों की प्रगति के प्रति सचेत और सक्रिय भूमिका अदा करने में कर्तव्यदक्ष रहते हैं।

1.1.9 रहन-सहन तथा खान-पान :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने रहन-सहन तथा खान-पान के बारें में लिखते है - "मैं साधारण तरीके से रहना और खान-पान पसंद करता हूँ। 'सादा जीवन उच्च विचार' के अनुरूप जीने की कोशिश करता हूँ। मुझे हरे पत्तों वाली सब्जियां, फल और दूध पसंद है। मद्यपान से अभी तक दूर हूँ। पान, सिगरेट आदि का भी शौक नहीं रखता। कपड़ों के मामलों में मेरा मत है - "कपड़े ज्यादा मँहगे न हो लेकिन साफ-सुथरे तरीके से सिले हुए हों जिन्हे पहनने के बाद व्यक्ति सुन्दर और आकर्षक लगे साथ ही आरामदायक भी हों। घर से बाहर पँन्ट कमीज, मौसम के अनुसार कोट-टाई भी पहनता

हूँ। तथा घर के अन्दर कुर्ता पायजामा, लुंगी और कभी-कभी टी शर्ट और वरमुडा भी पहनता हूँ।"[10]

1.2 व्यक्तित्व के विविध पहलु :

व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द Personality का पर्याय रहा है। व्यक्तित्व से तात्पर्य है - "व्यक्ति का गुण या भाव अथवा वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती हैं।"[11] डॉ.गंगाप्रसाद पाण्डेय जी व्यक्तित्व के बारे में लिखते हैं -"व्यक्तित्व व्यक्ति की वह विशेषता है जो उसे अन्य व्यक्तियों से भिन्न करती हुई उसके निजत्व का स्वरूप धारण करती हैं। व्यक्तित्व का निर्माण व्यक्ति के संस्कार, समाज वातावरण और उसकी शिक्षा संस्कृति के माध्यम से होता है।"[12] अत: जयप्रकाश कर्दम जी के जीवन परिचय को देखने के पश्चात उनके व्यक्तित्व के विविध पहलू तथा उनके व्यक्तित्व को बनाने वाले महत्त्वपूर्ण प्रभावों का संक्षिप्त रूप में विवेचन यहाँ पर प्रस्तुत करना उचित लगता हैं -

1.2.1 परिवारजनों से प्रभावित :

जयप्रकाश कर्दम जी उनके जीवन में अपने परिवारजनों से प्रभावित है। वे लिखते हैं - "बचपन में मेरे प्रेरणास्त्रोत मेरे चाचा हरपाल सिंह रहें, जिनसे मैंने जिन्दगी में प्रारंम्भिक सवक सीखे-श्रम, संघर्ष और संयम के। इसके साथ चाचा के मित्रों में से मुकूटलाल तोमर व श्री हुकूमसिंह से भी प्रोत्साहन और प्रेरणा मिली।"[13]

1.2.2 गुरुजनों से प्रभावित ः

जयप्रकाश कर्दम जी अपने जीवन को योग्य दिशा देनेवाले उनके आदर्श गुरुजनों से सदैव लाभान्वित तथा प्रेरित रहें हैं। उनकी साहित्य लेखन की सफलता तथा अपनी कर्तव्य पूर्ति के लिए निष्ठा और समर्पण और समाज चिंतन यह अमूल्य देन गुरुजनों से ही उन्हें प्राप्त हुई है। प्रायमरी स्कूल में मुरारीलाल शर्मा, इन्टरमीड़िएट कॉलेज में रामचरण शर्मा, श्री.किरणसिंह भारद्वाज, डिग्री कॉलेज में उनके पीएच.डी. के

... SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

मार्गदर्शक डॉ.एल.बी.राम अनन्त और लेखक तथा पत्रकार के रुप में राधाचरण विद्यार्थी एवं उनके गाँव के डॉ.देवीसिंह और रामसहाय आदि गुरुजनों ने उन्हें सदैव जीवन संघर्ष में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया हैं।

1.2.3 पुस्तकों से प्रभावित :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने शैक्षिक जीवन में डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी की पुस्तक 'Budha And His Dhamma' तथा चंद्रिका प्रसाद की पुस्तक 'डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी का जीवन संघर्ष' इन पुस्तकों से प्रभावित रहें। पाश्चात्य लेखक मेस्कीम गोर्की की आत्मकथा (तीन भागों में) और चार पुस्तकें - 'मॉ', 'मेरा बचपन', 'मेरा विश्वविद्यालय' तथा 'जीवन की राहों पर' आदि मौलिक पुस्तकों में निहित विचारों से प्रभावित, रहें हैं।"[14]

1.2.4 समाजसुधारकों से प्रभावित :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने जीवन में उनके वैचारिक चिंतन को गति प्रदान करनें में समाजसुधारकों से मिली प्रेरणा को महत्वपूर्ण मानते हुए लिखते है - "वैचारिक रुप से गौतम बुद्ध, कबीर, रैदास, जोतिबा फुले और डॉ.अम्बेड़कर मेरे प्रेरणास्त्रोत रहें हैं।"[15]

1.2.5 अनुशासनप्रिय :

जयप्रकाश कर्दम जी अपने जीवन में अनुशासन को महत्त्वपूर्ण पहलू के रुप में स्वीकारते हुए कहते है - "अनुशासन को मैं जीवन में सर्वोच्च महत्व देता हूँ। प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन का पालन हमारी प्रगति के लिए सीढ़ी का काम करता है। समय और ऊर्जा हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। जिस प्रकार हम इसका उपयोग करते हैं यही हमारे भावी जीवन की दिशा तय करता है।"[16] स्पष्ट है कि अनुशासन लेखक की जिंदगी का मूलमंत्र है।

1.2.6 मित्रों के चहेता :

जयप्रकाश कर्दम जी अपनी मित्रता के संबंधों के बारे में कहते है -"मित्र बनाना मेरी कमजोरी भी हैं।मैं बहुत जल्दी लोगों पर विश्वास करता हूँ, मित्र बन जाता हूँ या बना लेता हूँ और मित्रता का मूल्य समझते हुए बड़े से बड़ा सहयोग करने में तत्पर रहता हूँ।"[17] उनके मित्रों के नाम हैं - किशनचन्द टाइगर, ओमप्रकाश गौतम, प्रीतमकुमार।

1.2.7 शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्त्व देनेवाले :

संसार में शिक्षा मानवीय विकास का अविष्कार है और स्वास्थ्य मनुष्य की अमूल्य संपत्ती है। जिसके बल पर व्यक्ति अपना जीवन सुखी-संपन्नता के साथ जीता है। जयप्रकाश कर्दम जी मानवीय जीवन में शिक्षा और स्वास्थ्य की महत्ता को स्वीकारते हुए लिखते हैं - "शिक्षा और स्वास्थ्य मेरी दृष्टि से ये दो सर्वप्रमुख क्षेत्र है जिनपर हमें अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। निवेश के लिए भी इनसे बेहतर कोई अन्य क्षेत्र नहीं हो सकता।"[18]

1.2.8 मानवीय संबंधों को महत्त्व देनेवाले (बंधुता) :

जयप्रकाश कर्दम जी लिखते हैं - "मैं मानवीय संबंधों को बहुत महत्त्व देता हूँ। संबंध चाहे पारिवारिक हो, मित्रतापूर्ण या व्यवसायिक। प्रत्येक संबंध का अपना महत्त्व है। मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने में संबंधों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए संबंधों को उनकी उष्मा ऊर्जा और भावना के साथ जीया जाना चाहिए।"[19] अर्थात मानव की महत्ता और बंधुता को उनके जीवन में ऊँचा स्थान है।

1.2.9 व्यसनमुक्त :

जयप्रकाश कर्दम जी व्यसनमुक्त व्यक्ति है। वे स्वयं लिखते है - "मद्यपान से अभी तक दूर हूँ। पान, सिगरेट आदि का भी शौक नहीं रखता।"[20] महानगरीय जीवन में ऐसे बहुत कम लोग मिलते हैं जो अपने जीवन मूल्यों को सहेजकर

आदर्श बर्ताव करते हैं।

1.2.10 संघर्षशील :

जयप्रकाश कर्दम जी का व्यक्तित्व संघर्षशील रहा है। उन्हें जीवन में अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ा है तथा अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा है। वे लिखते है-"डगर से लेकर राजपथ तक के संघर्षशील यात्री के रूप में उनका जीवन उभरा है।"[21]

1.2.11 श्रमसाध्य रचनाकार तथा अध्ययनशील :

जयप्रकाश कर्दम जी अपनी रचनाओं में निहित तथ्य को सत्य रूप में स्थापित करने के लिए लेखन प्रक्रिया में कठोर परिश्रम उठाते है। वे लिखते है - "एक व्यक्ति के रूप में और एक लेखक के रूप में भी मैंने सदैव परिश्रम को सफलता का सर्वोच्च सूत्र माना है। अधिक से अधिक पढ़ना लेखक के लिए वहुत जरूरी हैं। पढ़ने से नए विचार, नई सूचनाएँ मिलती है। तार्किकता वढ़ती है, तथा अच्छा साहित्य सृजित करने की समझ मिलती है। अपनी रचनाओं से कभी-भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए। लिखने के बाद अपनी रचना को पुन: पढ़ने से उसकी कमजोरियाँ पता चल जाती है, उन कमजोरियों को दूर करने के लिए रचना को पुन: लिखना चाहिए। मुझे यह वताने में कोई संकोच नहीं है कि अपनी कुछ रचनाओं को मैंने कई वार री-राइट किया है।"[22] अत: उक्त विवेचन इस बात का संकेत है कि जयप्रकाश जी श्रमसाध्य रचनाकार तथा अध्ययनशील स्वभाव के व्यक्ति है। रचना से खुद को संतुष्टि होने तक वे इसमें सुधार करके लिखते हैं। रचनाकार की रचना के प्रति आत्मीयता के यहाँ दर्शन होते हैं।

1.2.12 मानवतावादी मूल्यों के पक्षधर : प्रगतिशील विचारक

जयप्रकाश कर्दम जी मानवतावादी मूल्यों के पक्षधर रहे हैं। वे अपने साहित्य सृजन में निहित उद्देश्य के संदर्भ में लिखते हैं - "मेरी दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य है, मनुष्य को वेहतर मनुष्य, समाज को वेहतर समाज और इस दुनियाँ को वेहतर दुनियाँ बनाना जहां मनुष्य की पहचान उसकी जाति, धर्म, नस्ल से न होकर मनुष्य के रूप में हो,

और मनुष्य अपनी मनुष्यता के साथ जीये। ऐसा होने के लिए आवश्यक है समाज में समानता, स्वतंत्रता, न्याय और भ्रातृत्व का होना। इन्हीं मानवीय मूल्यों की रक्षा और इनका विकास ही साहित्य का उद्देश्य हैं। अंधविश्वास और आडम्बर से मुक्त करके समाज की सोच को वैज्ञानिक बनाने की दिशा में भी साहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं।"[23] अत: उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जयप्रकाश जी मानवता के हिमायती तथा प्रगतिशील विचारधारा के अनुयायी हैं। वे मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखना चाहते हैं।

1.2.13 प्रामाणिकता : ईमानदार

जयप्रकाश कर्दम जी एक प्रामाणिक तथा ईमानदार व्यक्ति के रूप में परिचित है। वे कहते है - "अपनी प्रगति के लिए दूसरों को पीछे धकेलना, गिराना, धोखा देना या अन्य कोई अनैतिक रास्ता अपनाना जीवन के मुलभूत सिद्धान्त के विरूद्ध है - जो जीओं और जीने दो पर आधारित है।"[24] अत: उक्त कथन से विदित है कि जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व की प्रामाणिकता तथा ईमानदारी विशेषता हैं। वे खुद की विकास प्रक्रिया में दूसरों की हानि देखना नहीं चाहते हैं।

1.2.14 जीवन के प्रति दृष्टिकोन :

जयप्रकाश कर्दम जी मानवीय जीवन के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते है - "मैं मानता हूँ कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त हमारा जीवन जीने के लिए है और सबको समान रुप से जीने का अधिकार और अवसर होना चाहिए। जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोन सदैव सकारात्मक रहा है, विपरित परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखकर हमें आगे बढ़ने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में सफलता के लिए कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी का होना आवश्यक है। संघर्ष और आपदायें हमें मजबूती प्रदान करती हैं, हमें ताकत देती हैं।"[25] अत: उक्त कथन में निहित विचार मानवीय जीवन के लिए प्रेरणादायी है। वे कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास, ईमानदारी को सफल जीवन की कुंजी मानते हैं।

1.2.15 नास्तिकता :

जयप्रकाश कर्दम जी गौतम बुद्ध, कवीर, जोतिवा फुले तथा अम्बेड़करवादी विचारों के अनुयायी है। वे सृष्टि में मनुष्य की सत्ता को ही सर्वोपरी मानते हैं। अर्थात मनुष्य की महत्ता को ही स्वीकारते हैं। वे अपने साहित्य सृजन के माध्यम से भी मानवतावादी मूल्यों का प्रचार-प्रसार करके मानवता के पक्षधर हैं। वे आस्तिकता को नकारते हुए नास्तिकता के पक्षधर हैं।

1.2.16 संवेदनशील तथा भावुक :

जयप्रकाश कर्दम जी के व्यक्तित्व का यहा एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। संवेदनशीलता एवं भावुकता उनके मित्रों के संबंधी विचार इसका सबूत हैं, वे लिखते है - "कई बार मित्रों से ही मैंने धोखा खाया है, आहत भी हुआ हूँ और उनकी उपेक्षा का शिकार भी बना हूँ लेकिन मैंने मित्रों पर विश्वास करना नहीं छोड़ा है।"[26] जयप्रकाश जी ने उनके रचनाओं में भी दलित, पीड़ित, शोषित मानव को केंद्र में रखकर उनकी यथार्थता को उजागर किया है।इससे स्पष्ट है कि इनका स्वभाव संवेदनशील तथा भावुक है।

1.2.17 दलितों के प्रति आस्था :

जयप्रकाश कर्दम जी एक दलित परिवार में जन्म लेने के कारण वे दलित समाज की पीड़ा, व्यथा, दर्द, वेदना तथा उनकी कई समस्याओं से स्वानुभूत परिचित हैं। उन्होंने इसी अनुभूति को अपनी रचनाओं में रेखांकित कर दलित समाज के यथार्थता को उजागर करके उनके प्रगति के लिए मौलिक विचारों को अपने साहित्य सृजन के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक महत् कार्य किया है। इस कार्यपूर्ति से स्पष्ट है कि जयप्रकाश कर्दम जी के मन में दलितों के प्रति आस्था हैं। स्वजाति, स्वजन आदि के प्रति उनके मन में अतीव आस्था के दर्शन होते हैं।

1.2.18 दलित साहित्य सृजन : प्रेरणा

जयप्रकाश कर्दम अपने दलित साहित्य सृजन के संदर्भ में लिखते हैं -"मेरा गाँव अम्बेड़करवादी विचारों से परिचित और प्रभावित एक वहुल गाँव है। आजादी के बाद की पीढ़ी बाबासाहब अम्बेड़कर के विचारों से परिचित हुई तथा गाँव में बौद्ध धर्म और अम्बेड़कर का प्रचार-प्रसार हुआ। बचपन से ही मैं इन विचारों के संपर्क में आया। सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यकलापों में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए मस्तिष्क में दलित प्रश्न कुलबुलाने लगे। व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना मन में पैदा होने लगी और जब लिखना शुरू किया तो स्वाभाविक रूप से ये सब बातें ये सब प्रश्न मेरी रचनाओं का विषय बनने लगे।"[27] उन्होंने अनुभूति और संवेदना से प्रेरणा लेकर दलित साहित्य सृजन का कार्य हाथ में लिया है।

1.3 जयप्रकाश कर्दम का साहित्य परिचय : कृतित्व

गौतम बुद्ध, कबीर, महात्मा फुले तथा अम्बेड़करवादी विचारों के अनुयायी एवं दलित जीवन की वास्तविकता के जानकार के रूप में जयप्रकाश कर्दम जी की पहचान है। जयप्रकाश जी ने अपनी शिक्षा का उपयोग अपने समाज के प्रति कर्तव्य तथा दायित्व समझकर दलितों की पीड़ा को वाणी देने के लिए साहित्य सृजन का महत् कार्य किया है।

जयप्रकाश कर्दम जी उन विशिष्ट साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं को जिंदगी के अनुभवों से जोड़ने की चुनौती स्वीकार की है। उन्हें गहरे यथार्थ से जोड़ा है। जयप्रकाश कर्दम का रचना संसार सृष्टि में मात्र आदमी की पहचान बनाने की अथक कोशिश लगता है। उन्होंने साहित्य क्षेत्र में उपन्यास, कहानी , कविता, आलोचना-विचारप्रबंध, अनुवाद, बाल साहित्य आदि विधाओं का सृजन करके बड़ा योगदान निभाया है। उनके मौलिक साहित्य सृजन से साहित्य क्षेत्र में उनका व्यक्तित्व सम्माननीय और प्रशंसनीय बना है। जयप्रकाश कर्दम जी के साहित्य का विवरण यहां पर इस प्रकार प्रस्तुत हैं -

1.3.1 उपन्यास :

1. करुणा सन् 1986
2. छप्पर सन् 1994

1.3.2 बाल उपन्यास :

1. श्मशान का रहस्य

1.3.3 कहानी संग्रह :

1. तलाश

1.3.4 कविता संग्रह :

1. गूँगा नहीं था मैं
2. तिनका - तिनका आग

1.3.5 विचार प्रबंध / आलोचना :

1. वर्तमान दलित आंदोलन
2. अम्बेड़करवादी आंदोलन : दशा और दिशा
3. डॉ.अम्बेड़कर : दलित और बौद्धधर्म
4. हिन्दुत्व और दलित : कुछ प्रश्न कुछ विचार
5. इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन : साहित्य एवं समाज चिंतन
6. दलित विमर्श : साहित्य के आइने में
7. बौद्ध धर्म के आधार स्तम्भ

1.3.6 शोध - प्रबंध :

1. रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन

1.3.7 संपादित पुस्तकें :

1. जाति : एक विमर्श
2. बौद्ध धर्म और दलित

3. गुलामगिरी

1.3.8 बाल साहित्य :

1. महान बौद्ध बालक
2. मानवता के दूत
3. बुद्ध की शरणागत नारियाँ
4. बुद्ध और उनके प्रिय शिष्य
5. बुद्ध का समय
6. बौद्ध दार्शनिक
7. बौद्ध गाथाये
8. डॉ.अम्बेडकर का बचपन
9. डॉ.अम्बेडकर और उनके समकालीन
10. संतों की दुनियाँ
11. आदिवासी देवकथा - लिंगो
12. हमारे वैज्ञानिक - सी.वी.रामन

1.3.9 अनुवादित पुस्तक :

1. चमार ('दि चमार्स' का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद)

1.3.10 प्रकाशाधीन पुस्तकें :

1. हिंदी दलित साहित्य में सामाजिक - सांस्कृतिक चेतना
2. दलित साहित्य का दर्शन

1.3.11 पत्र - पत्रिकाओं से जुड़ाव :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी, (उत्तरप्रदेश) की त्रैमासिक शोध / आलोचना पत्रिका नया मानदंड के 'दलित चेतना', दलित साहित्य' व 'दलित आत्मकथा'

विशेषांको का संपादन।

2. दलित साहित्य (वार्षिकी) का **1999** से निरंतर संपादन।

1.3.12 अन्य विवरण :

1. अनेक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और उनसे अन्य साहित्य सेमिनारों, संगोष्ठियों में शोध - पत्रों का वाचन, व्याख्यान।
2. मराठी, मलयालम, तेलगू, पंजाबी, गुजराती, बंगला व अंग्रेजी में रचनाएँ अनुदित।
3. 'छप्पर' उपन्यास मराठी और तेलगु में अनुदित।
4. राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानियाँ, कविताएँ, रिर्पोताज, साक्षात्कार, समीक्षाएँ एवं स्मृति लेख आदि निरंतर प्रकाशित।
5. अनेक पुस्तकों-संग्रहों, विशेषांको, स्मारिकाओं में रचनाएँ संग्रहित।
6. दूरदर्शन, आकाशवाणी के कई चैनल, केंद्रो से विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत वार्ताएँ आलेख, कविताएँ साक्षात्कार आदि प्रसारित।
7. सदस्य, हिंदी अकादमी, दिल्ली।

फैलोशिप / पुरस्कार / सम्मान :

जयप्रकाश कर्दम जी की साहित्य सेवा और सशक्त साहित्य सर्जना तथा सामाजिक कार्यो के लिए भारत के अनेक लब्ध प्रतिष्ठित पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया हुआ है, ये सम्मान एवं पुरस्कार निम्नांकित हैं -

1.3.13 फैलोशिप :

1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (संस्कृति विभाग) भारत सरकार द्वारा फैलोशिप।

1. भारतीय बौद्ध महासभा, उत्तरप्रदेश द्वारा फैलोशिप।

1.3.14 पुरस्कार :

1. उत्तरप्रदेश समाज विकास संगठन द्वारा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर रत्न पुरस्कार।

1.3.15 सम्मान :

1. राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन द्वारा साहित्य सारस्वत सम्मान।
2. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश द्वारा संत कबीर सम्मान।
3. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उत्तरप्रदेश द्वारा संत रैदास सम्मान।
4. मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा कृति सम्मान।
5. भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर राष्ट्रीय सम्मान।
6. बहुजन अन्याय एक्शन समिति, अमरावती (महाराष्ट्र) द्वारा सम्मान।
7. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, भोपाल द्वारा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर अस्मिता सम्मान आदि।

निष्कर्ष :

जयप्रकाश कर्दम जी हिंदी दलित साहित्य में समाजाभिमुख, चिंतनशील, जागृत साहित्यकार के रुप में परिचित रहें हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश में स्थित इन्दरगढ़ी गाँव में एक दलित मजदूर किसान परिवार में हुआ। वे बाल्यकाल से ही पढ़ाई में रूचि रखनेवाले कुशाग्र बुद्धि के छात्र थे। उनके पिताजी हरिसिंह की बीमारी के कारण परिवार के उदरनिर्वाह के लिए उनकी माँ अतरकली जी मेहनत-मजदूरी के बल पर उनके परिवार का निर्वाह हुआ करता था।

जयप्रकाश जी के पिता की असमय मृत्यु के कारण जयप्रकाश जी को अपने पढ़ाई के साथ-साथ मेहनत-मजदूरी करनी पड़ी। आर्थिक अभावों से संघर्षरत रहकर, उच्च शिक्षा ग्रहण की। आज जयप्रकाश जी केंद्र सरकार में उच्च पद पर विराजमान होकर अपना सामाजिक दायित्व निभाते हुए दलित समाज सुधार तथा दलित समाज जागृति हेतु सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सदैव प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं।

उनका विवाह दिल्ली में स्थित उच्चशिक्षित श्रीमती ताराजी से संपन्न हुआ। उनकी पत्नी का अध्यापक होने के कारण बालबच्चों की तरक्की में वह सदा जुड़ी रहती है। जयप्रकाश जी अपने परिवार के भविष्य के बारे में भी सजग रहते है। वे अपने जीवन में सीधी रहन-सहन तथा उच्च विचारों को स्वीकारते हैं।उनका व्यक्तित्व बहुआयामी गुणों से संपन्न है। वे बुद्ध, कबीर, रैदास, जोतिवा फुले और वावासाहव अम्बेड़कर इन महामानवों के मानवतावादी विचारों के अनुयायी है। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, शिक्षा और स्वास्थ्य, बंधुता, प्रामाणिकता, दलितों के प्रति आस्था आदि महत्त्वपूर्ण बिंदू हैं।

जयप्रकाश जी ने साहित्य सृजन द्वारा दलितों के विकास के लिए सामाजिक न्याय तथा समता, स्वतंत्रता, बंधुता इन मानवतावादी मूल्यों की मांग की है। उन्होंने अपने उपन्यास, कहानी, काव्य, वैचारिक लेखन आदि के माध्यम से सामाजिक जागृति का कार्य किया है। जयप्रकाश जी सामाजिक कार्यो तथा साहित्य सृजन के महत्कार्यो के कारण अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से विभूषित हैं, किन्तु इन सम्मानों के बावजूद भी वे अपने पाठकों के प्यार को सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार और सम्मान मनाते हैं।

जयप्रकाश जी का व्यक्तित्व उर्ध्वगामी है, आपत्तियों के कीचड़ में धसे रहने की अपेक्षा वे संघर्षरत बनकर इन आपत्तियों का निराकरण करते हैं। पानी का सोता जैसे अवरोधों को दूर करते-करते अपना रास्ता प्रशस्त करता है वैसे उनका जीवन लगता है। सवर्ण समाज की मानसिकता से टकराते - टकराते उन्होंने अपने विकास का पूल प्रशस्त बनाया है। एक दलित परिवार में जन्म लेकर भी उनकी रहन - सहन में कोई

दब्बूपन का लेश भी दिखाई नहीं देता है। व्यवस्था को दोष देने की अपेक्षा तटस्थ रहकर अपना मार्ग प्रशस्त करने में वे धन्यता मानते है। अपने समाज बांधवों के प्रति उनके मन में अतिव प्रेम दिखाई देता है। उनकी विचारधारा अम्बेडकर, महात्मा फुले, संत कबीर की विचारधारा की पक्षधर है। वे अपने लेखन के माध्यम से फुले, अम्बेड़कर, कबीर की विचारधारा के साथ-साथ मार्क्सवादी विचारधारा को भी प्रवाहित करते हुए दिखाई देते है। स्वातंज्य, समता, बंधुता को वे अपने साहित्य की त्रिवेणी मानते हैं। दलित पीड़ा को समाज जीवन का अभिशाप मानकर विकास की प्रक्रिया में सभी को समान न्याय की माँग करते हैं। जयप्रकाश नाम की भॉति जयप्रकाश है जो अपने पीड़ित समाज को 'जय' के साथ-साथ 'प्रकाश' से भी लाभान्वित करना चाहते हैं। उन्हें दीपस्तंभ की भाँति प्रशस्त मार्ग दिखाना चाहते है। जयप्रकाश जी दलित समाज में जन्मे हो फिर भी उनकी रहन-सहन और उनकी स्वभावगत प्रवृत्तियों ने उन्हें द्विजों से भी श्रेष्ठ ठहराया हुआ लक्षित होता है। अनेक सम्मानों की अपेक्षा वे अपने पाठक वर्ग को अधिक महत्त्व देते है। पाठक ही उनके लिए बड़ा सम्मान है। यह उनकी धारणा उनके विनय का सर्वोच्च बिंदू हैं। सुशील, सद्वर्तनी, सद्व्यवहारी, अनुशासनप्रिय, परिजनों के प्रेमी के रूप में उनका महत्त्व अनन्यसाधारण हैं। उनके स्वभाव में मित्र जोड़ने की कला है। उनका व्यक्तित्व मानवता का हिमायती है।

संदर्भ - संकेत

----

1. परिशिष्ट 1 से उध्दृत
2. वहीं
3. वहीं
4. वहीं
5. वहीं
6. वहीं
7. वहीं
8. वहीं
9. वहीं
10. वहीं
11. श्री नवल जी 'नालंदा शब्द सागर' पृ. 1309
12. डॉ.गंगाप्रसाद पाण्डेय - 'महाप्राण निराला' पृ. 23
13. परिशिष्ट 1 से उध्दृत
14. वहीं
15. वहीं
16. वहीं
17. वहीं
18. वहीं
19. वहीं
20. वहीं
21. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - 'छप्पर' पुस्तक के फ्लैप से उध्दृत

22. परिशिष्ट 1 से उध्दृत

23. वहीं

24. वहीं

25. वहीं

26. वहीं

27. वहीं